श्री दशलक्षण धर्म

श्री दशलक्षण पर्व वर्ष में तीन समय मनाये जाते हैं।

१. भाद्रपद सुदी पंचमी से भाद्रपद सुदी चौदस तक
२. माघ सुदी पंचमी से माघ सुदी चौदस तक
३. चैत्र सुदी पंचमी से चैत्र सुदी चौदस तक

१. क्षमा	शांत तथा समता भाव से अपने आप में क्लेश ना होने देना व क्रोध छोड़ना।
२. मार्दव	मान नहीं करना, अहं छोड़ना।
३. आर्जव	कपट नहीं करना, माया कपट छोड़ना।
४. सत्य	सत्य वचन बोलना।
५. शौच	लोभ नहीं करना।
६. संयम	इन्द्रियों व मन को वश में रखना
७. तप	इच्छायें छोड़ना।
८. त्याग	त्याग करना।
९. आकिंचन	परिग्रह का त्याग करना।
१०. ब्रह्मचर्य	विषय सेवन व यौन भावों को मन वचन काम से छोड़ना।